उदावर्त

डॉ. प्रतीक्षा शर्मा
Assistant Professor
Kaya Chikitsa Department

निरुक्ति

- उद्भूतेन वेग विधारणेनाव्रतस्य वायोर्वतनमित्युदावर्तः ।

(मधुकोश)

- अर्थात् वेग धारण से उत्पन्न वायु का प्रतिलोम होना ही उदावर्त है । वेगधारण से वायु की स्वाभाविक गति में अवरोध होता है । अत : वायु विलोम होकर ऊर्ध्वगति स्वरूप मुख से निकलने लगता है , फलतः ऊर्ध्वमार्ग से मल मूत्रादि भी प्रवृत्त होने लगते हैं ।

- यत्रोर्ध्व जायते वायोरावेग: स चिकित्सके:| उदावर्त इति प्रोक्तो व्याधिर्व्याधि विशारदे : ||

वायु का ऊपर जाना ही उदावर्त कहा जाता है| इस प्रकार अपान वायु की विकृति का नाम उदावर्त है |

प्रमुख संदर्भ ग्रंथ

चरक चिकित्सा – अध्याय 26

. सुश्रुत संहिता , उत्तर तंत्र – अध्याय 55

अष्टाङ्गं संग्रह , सूत्र स्थान – अध्याय 5

अष्टाङ्गं हृदय , सूत्र स्थान – अध्याय 4

भैषज्य रत्नावली – अध्याय 31

भाव प्रकाश – अध्याय 31

माधव निदान – अध्याय 27

निदान

"कषायतिक्तोषणरूक्षभोज्यैः संधारणाभोजनमैथुनश्च ।

च.चि.

26/5

आचार्य चरक ने उदावर्त के निम्न निदानों का वर्णन किया है

1 . कषाय , तिक्त एवं कटु पदार्थों का अधिक सेवन ।

2 . रूक्ष अन्न पान सेवन ।

3 . वेगावरोध ।

4 . उपवास व अति लंघन ।

5 . सम्प्राप्ति उपरोक्त अति मैथुन |

संप्राप्ति

" पक्काशये कुप्यति चेदपानः स्रोतांस्यधोगानि बली स रुद्धवा । करोति विण्मारुतमूत्रसंङ्ग क्रमाद्दावर्तमतः सुघोरम् ॥ " (च.चि. 26 / 5-6)

निदान सेवन

वेग धारण

अपान वायु का पक्काशय में प्रकोप

अपान वायु का विलोम होना मल – मूत्र व अपान वायु का अवरोध

उदावर्त

संप्राप्ति घटक

- दोष- अपान वायु
- दृष्य- रस
- स्त्रोतस् -पुरीषवह
- अधिष्ठान –सर्वांग
- स्त्रोतोदुष्टि -विमार्ग गमन

भेद

- वातविण्मूत्रजृम्भाअश्रुत्क्षवोद्गारवमीन्द्रियैः । क्षुत्तृष्णाश्वासनिद्राणामुदावर्तो विधारणात् ॥ (सु.उ.त. 55/4)
- 1 . वात निरोधज
- 2. पुरीष निरोधज
- 3. मूत्र निरोधज
- 4. उद्गार निरोधज
- 5 . छर्दि निरोधज
- 6. क्षुधा निरोधज
- 7. तृष्णा निरोधज
- 8. जृम्भा निरोधज
- 9. अश्रु निरोधज
- 10. क्षवथु निरोधन
- 11. शुक्र निरोधज
- 12. श्वास निरोधज
- 13. निद्रा निरोधज

सामान्य लक्षण

- " रूग्वस्तिहृत्कुक्ष्युदरेष्वभीक्ष्णं , सपृष्ठपार्श्वेष्वतिदारुणा स्यात् ।
  आध्मानहृल्लासविकर्तिकाच तोदोऽविपाकश्च सवस्तिशोधः ॥
  वर्चोऽप्रवृत्तिर्जठरे च गण्डान्युर्ध्व च वायुर्विहितो गुदे स्यात् ।

  कृच्छ्रेण शुष्कस्य चिरात् प्रवृत्तिः स्याता तनः स्यात् खररूक्षशीता ॥ "

(च.चि. 26 / 6-7)

आचार्य चरक ने उदावर्त के निम्न सामान्य लक्षण वर्णित किए हैं

1 . वस्ति , हृदय , कुक्षि एवं उदर प्रदेश में पीड़ा (Pain in whole abdomen

2 . पीठ एवं पसलियों में पीड़ा (Pain in back & costal region) 3 . उदर में आध्मान (Tympanitis) हल्लास (Nausea) 5 . गुद प्रदेश में कैंची से काटने जैसी पीड़ा (Cutting pain in anal region) सुई सुभने सी वेदना (Pricking pain in body) 7 . अपाक (Indigestion) 8 . वस्ति शोथ (Cystitis) 9 . मलावरोध (Constipation) 10. पेट में मल की गांठ बनना (Hard stool) 11. कष्ट पूर्वक मल की प्रवृत्ति (Painful defecation) 12. उद्गार (Belching) 13. खर , रुक्ष , शीत मल प्रवृत्ति (Dry , rough , cold stool)

आचार्य चरक ने उदावर्त के निम्न सामान्य लक्षण वर्णित किए हैं

1 . वस्ति , हृदय , कुक्षि एवं उदर प्रदेश में पीड़ा (Pain in whole abdomen
2 . पीठ एवं पसलियों में पीड़ा (Pain in back & costal region)
3 . उदर में आध्मान (Tympanitis)
4. हल्लास (Nausea)
5 . गुद प्रदेश में कैंची से काटने जैसी पीड़ा (Cutting pain in anal region)
6. सुई सुभने सी वेदना (Pricking pain in body)
7 . अपाक (Indigestion)
8 . वस्ति शोथ (Cystitis)
9 . मलावरोध (Constipation)
10. पेट में मल की गांठ बनना (Hard stool)
11. कष्ट पूर्वक मल की प्रवृत्ति (Painful defecation)
12. उद्गार (Belching)
13. खर , रुक्ष , शीत मल प्रवृत्ति (Dry , rough , cold stool)

ततश्च रोगा ज्वरमूत्रकृच्छ्रप्रवाहिका हृद्ग्रहणीप्रदोषाः ॥ ८ ॥
वम्यान्ध्यबाधिर्यशिरोऽभितापवातोदराष्ठीलामनोविकाराः ।
तृष्णास्त्रपित्तअरुचिगुल्मकासश्वासप्रतिश्यायार्दितपार्श्वरोगाः ॥९
अन्ये च रोगा बहवोऽनिलोत्था भवन्त्युदावर्तकृताः सुघोराः । च.चि.२६

उदावर्त से होने वाले रोग -

ज्वर , मूत्रकृच्छ्र , प्रवाहिका , हृदयरोग , ग्रहणी रोग , वमन , अन्धापन , बहिरापन , शिरःशूल (या सिर में दाह) , वातजन्य उदर रोग , अष्ठीला ; मानसिक रोग , तृष्णा , रक्तपित्त , भोजन में भरुचि , गुल्मरोग , कास , श्वास (Asthma) , प्रतिश्याय , अर्दित , पार्श्व में वेदना और अन्य वायुजन्य भयंकर रोग उदावर्त होने के बाद हो जाते हैं ।

वातज उदावर्त लक्षण

आध्मानशूलौ हृदयोपरोधं शिरोरुजं श्वासमतीव हिक्काम् । कासप्रतिश्यायगलग्रहांश्च बलासपित्तप्रसरञ्च घोरम् । कुर्यादपानोऽभिहतः स्वमार्गे हन्यात् पुरीषं मुखतः क्षिपेद्वा ॥७ ॥

आध्मान , शूल , हृदय का उपरोध या हृदय पर आवरण , सिर में पीड़ा , प्रबल श्वास , हिक्का , कास , प्रतिश्याय , गलग्रह (गले की जकड़ाहट) , कफ और पित्त का अपने स्थानों से प्रसार कराना तथा पुरीष का क्षय अथवा उसे मुखमार्ग से बाहर फेंकना ये लक्षण उत्पन्न करता है ।।७ ।।

आस्थापनं मारुतजे स्निग्धस्विन्ने विशिष्यते वातोदावर्तचिकित्सा

वातोदावर्तचिकित्सा- वातजन्य उदावर्त में प्रथम स्नेहन तथा स्वेदनकर्म करके पश्चात् आस्थापन (निरूहण) बस्ति का प्रयोग विशिष्ट रूप से करना चाहिए ।

पुरीष निरोधज उदावर्त

- आटोपशूलौ परिकर्त्तनच सङ्गः पुरीषस्य तथोर्ध्ववातः ।
  पुरीषमास्यादपि निरेति पुरीषवेगेऽभिहते नरस्य ॥८ |

- आटोप , शूल , गुदमेढ्रस्त्यादि स्थानों में कैची काटने की सी पीड़ा , मल का अवरोध , अपान वात का ऊपर की ओर वेग अथवा कभी – कभी मुख की ओर से पुरीष का हर निकलना ये लक्षण उत्पन्न होते है ।।८ ।।

- पुरीषजे तु कर्त्तव्यो विधिरानाहिको भवेत् ॥२०

- पुरीषजन्य उदावर्त में आनाहरोगोक्त विधि (फलवर्ती आदि) का प्रयोग करना , चाहिये ॥२० ॥

मूत्र निरोधज उदावर्त

- मूत्रस्य वेगेऽभिहते नरस्तु कृच्छ्रेण मूत्रं कुरुतेऽल्पमल्पम् ॥९ ॥ मेढ्रे गुदे वङ्गणबस्तिमुष्कनाभिप्रदेशेष्वथवाऽपि मूनि । आनद्धबस्तिश्च भवन्ति तीव्राः शूलाश्च शूलैरिव भिन्नमूर्तेः ॥१० ॥

मूत्रावरोधोत्पन्नोदावर्तलक्षणानि –

उत्पन्न हुए मूत्र के वेग को रोकने से वह रोगी कठिनता से थोड़ा – थोड़ा मूत्र त्याग करताहै तथा शिश्न , गुदा , वंक्षण , बस्ति (Bladder) , मुष्क (अण्ड तथा अण्ड प्रदेश) , नाभिप्रदेश और मस्तिष्कप्रदेश में त्रिशूल से शरीर के भिन्न किये जाने के समान तीव्र शूल होता है । बस्ति (मूत्राशय) फूली हुई होती है ।।९ -१० ॥

सौवर्चलाढ्यां सदिरां मूत्रे त्वभिहते पिबेत् । एलां वाऽप्यथ मद्येन क्षीरं वाऽपि पिबेन्नरः ॥ २१

मूत्रोदावर्तचिकित्सा – मूत्रवेग के रोकने से उत्पन्न हुए उदावर्त में अधिक सौंचल लवण के प्रक्षेप से युक्त मद्य का पानकराना चाहिए ।

अथवा इलायची के ३ माशे से ६ माशे भर चूर्ण को २ / , तोले से ५ तोले मद्य में मिला के पान कराना चाहिए । किंवा प्रभूत मात्रा में दुग्धपान कराना चाहिए ।।२१ ॥

जृम्भा निरोधज उदावर्त

- मन्यागलस्तम्भशिरोविकारा जृम्भोपघातात् पवनात्मकाः स्युः ।
  श्रोत्राननघ्राणविलोचनोत्था भवन्ति तीव्राश्च तथा विकाराः ॥११ ॥

जृम्भावरोधोत्पन्नोदावर्तलक्षणानि - जृम्भा के उत्पन्न हुए वेग को रोकने से मन्यास्तम्भ , गलस्तम्भ , सूर्यावर्तकादिक सिर के विकार , कम्प , सुप्ति आदि वातविकार , चकार से अरुचि और भ्रम आदि रोग एवं कर्ण , मुख , नासा और नेत्रों में भयानक विविध रोग उत्पन्न होते हैं ॥११ ॥

स्नेहे : स्वेदैरुदावर्त्त जम्भाजं समुपाचरेत् ।

जृम्भा के रोकने से उत्पन्न हुए उदावर्त में प्रथम स्नेहन और पश्चात् स्वेदनकर्म करना चाहिए ।

अश्रु निरोधज उदावर्त

- आनन्दजं शोकसमुद्भवं वा नेत्रोदकं प्राप्तममुञ्चतो हि । शिरोगुरुत्वं , नयनामयाश्च भवन्ति तीव्राः सह पीनसेन ॥१२ ॥

अश्रुजोदावर्तलक्षणानि

- अत्यधिक आनन्द के कारण उत्पन्न हुए अथवा अत्यधिक शोक के कारण प्रवृत्त हुए नेत्र उदक (आँसू) के वेग को रोकने से सिर में भारीपन , अभिष्यन्द आदि तीव्र नेत्रविकार और पीनस (दुष्ट प्रतिश्याय) उत्पन्न हो हैं ॥१२ ॥

अश्रुमोक्षोऽश्रुजे कार्यः स्निग्धस्विन्नस्य देहिनः ॥२८

अश्रुनिरोधजन्य उदावत में प्रथम स्नेहन कराके स्वेदन कर पश्चात् अश्रुमोक्षणकर्म करना चाहिए ॥२८ ॥

क्षवथू निरोधज उदावर्त

- प्रतिश्यायोऽक्षिरोगश्च भवन्ति गाढं क्षवथोर्विघाताच्छिरोऽक्षिनासाश्रवणेषु रोगाः । कण्ठास्यपूर्णत्वमतीव तोदः कूजश्च वायोरुत वाऽप्रवृत्तिः ॥१३ ॥

सिर , नासा और नेत्रों में भयानक रोग होते हैं तथा

कण्ठ और मुख वायु से भरे हुए से रहते है तथा उनमें सूई चुभोने की सी पीड़ा

वह रुग्ण कूजन (अव्यक्त भाषण) करता है तथा

वायु की अप्रवृत्ति (उच्छवासावरोध) एवं चकारात् मन्यास्तम्भ , गलस्तम्भ

- तीक्ष्णाञ्जनावपीडाभ्यां तीक्ष्णगन्धोपशिङ्खनैः । वर्तिप्रयोगैरथवा क्षवसक्ति प्रवर्त्तयेत् । तीक्ष्णौषधप्रधमनैरथवाऽऽदित्यरश्मिभिः ॥२ ९ ॥
- मरिच , पिप्पली आदि के तीक्ष्ण अञ्जन तथा अवपीडन नस्य एवं तीक्ष्णगन्ध – द्रव्यों के चूर्ण को सूंघने से अथवा धूमवर्ति के प्रयोग से छींक को प्रवर्तित कर छिक्कानिरोधजन्य उदावर्त को नष्ट करें ।
- तीक्ष्ण औषधियों के चूर्ण का नासा में प्रधमन करने से किंवा सूर्य की किरणों के सम्मुख ३-४ मिनट तक देखते रहने से हिक्का की प्रवृत्ति होकर छिक्कारोधजन्य उदावर्त नष्ट होता है ॥२९ ॥

उद्गार निरोधज उदावर्त

- उद्गारवेगेऽभिहते भवन्ति घोरा विकाराः पवनप्रसूताः ।
- कम्प , हिक्का , हृदय की जकड़ाहट आदि भयङ्कर वातज रोग

- उद्गारजे क्रमोपेतं स्नैहिकं धूममाचरेत् । सुरां सौवर्चलवतीं बीजपूररसान्वितम् ॥ ३० ॥

धूम , नस्य , कवलग्रह इस क्रम से स्नैहिक धूम का प्रयोग करना चाहिए तथा सौवर्चल लवण के प्रक्षेप के साथ बिजौरे निंबू के रस से युक्त सुरा का पान कराना चाहिए ॥ ३० ॥

छर्दि निरोधज उदावर्त

- छर्देविघातेन भवेच्च कुष्ठं येनैव दोषेण विदग्धमन्नम् ॥१४ ॥
- कुष्ठ
- अरुचि

छाघातं यथादोघं सम्यक् स्नेहादिभिर्जयेत् । सक्षारलवणोपेतमभ्यङ्गं चात्र दापयेत् ॥३१ ॥

- स्नेहन , स्वेदन वमन और विरेचन कराके पश्चात् यवक्षार और सैन्धव मिश्रित घृत या तैल का अभ्यङ्ग कराना चाहिए ।।३१ ।।

शुक्र निरोधज उदावर्त

- मूत्राशये पायुनि मुष्कयोश्च शोफो रुजो मूत्रविनिग्रहश्च । शुक्राश्मरी तत्स्रवणं भवेद्वा ते ते विकारा विहते तु शुक्रे ॥१५ ॥
- बस्ति , गुदा और मुष्कप्रदेश में शोथ और पीडा उत्पन्न होती है तथा
- मूत्र का अवरोध होता है एवं

शुक्रजन्य अश्मरी और उस अश्मरी का अथवा शुक्र का स्रवण होता है । इनके अतिरिक्त हृत्पीड़ा , अङ्गमर्द आदि अनेक विकार उत्पत्र होते हैं ॥१५ ॥

बस्तिशुद्धिकरावापं चतुर्गुणजलं पयः ॥३२ ॥ आवारिनाशात् क्वथितं पीतवन्तं प्रकामतः । रमयेयुः प्रिया नार्यः शुक्रोदावर्तिनं नरम् ॥३३ ॥

बस्ति को शुद्ध करने वाले पञ्चतृण , गोखरू , ककड़ीबीज , कूष्माण्डबीज आदि द्रव्यों का चूर्ण दुग्ध से अष्टमांश प्रमाण में लेकर दुग्ध में प्रक्षिप्त करें तथा

- दुग्ध से चतुर्गुण पानी मिलाकर पानी के नष्ट होने तक दुग्ध को पका के मन्दोष्ण होने पर छान कर शुक्रोदावर्त के रोगी को पिला के उसके साथ अनुरागवती स्त्रिया रमण करें ।।३२-३३ ।।

क्षुधा निरोधज उदावर्त

- तन्द्राऽङ्गमर्दारुचिविभ्रमाः स्युः क्षुधोऽभिघातात् कशता च दृष्टेः ।
- तन्द्रा, अङ्गमर्द , अरुचि , विभ्रम चक्कर आना) और दर्शनशक्ति की निर्बलता ये लक्षण उत्पन्न होते हैं

- क्षुद्विघाते हितं स्निग्धमुष्णमल्पञ्च भोजनम् ।
- क्षुधा के रोकने से उत्पन्न हुए उदावर्त रोग में स्निग्ध तथा उष्ण अल्प भोजन हितकारी होता है

तृष्णा निरोधज उदावर्त

कण्ठास्यशोषः श्रवणावरोधस्तृष्णाऽभिघाताद् हृदये व्यथा च ॥ १६

कण्ठ और मुख का सूखना , श्रवण का अवरोध (बाधिर्य) , प्यास की अधिकता तथा हृदय में व्यथा (पीड़ा) उत्पन्न होती है ॥ १६ ॥

तृष्णाघाते पिबेन्मन्थं यवागू वाऽपि शीतलाम् ॥ ३

घृत और शीतल पानी में घोले हुए सत्तु (मन्थ) तथा शीतल यवागू का पान कराना चाहिए ॥ ३४ ||

श्वास निरोधज उदावर्त

- श्रान्तस्य निःश्वासविनिग्रहेण हृद्रोगमोहावथवाऽपि गुल्मः ।

हृदय के रोग , मूर्च्छा और गुल्म उत्पन्न होते हैं ।

- भोज्यो रसेन विश्रान्तः श्रमश्वासातुरो नरः ।
- चिकित्सा – श्रम के कारण उत्पन्न हुए श्वास के संशमन के लिये प्रथम रुग्ण को विश्रान्ति देकर पश्चात् मांसरस का भोजन कराना चाहिए

निद्रा निरोधज उदावर्त

जृम्भाऽङ्गमर्दोऽङ्गशिरोऽक्षिजाड्यं निद्राऽभिघातादथवाऽपि तंद्रा

जृम्भा अङ्गमर्द तथा शरीर के हस्तपादादि अङ्ग , सिर और नेत्रों में जड़ता (अपाटव) और तंद्रा ये लक्षण उत्पन्न होते हैं ॥१७

निद्राघाते पिबेत् क्षीरं स्वप्याच्चेष्टकथा नरः ॥३६ ॥

निद्रावरोध से उत्पन्न हुए उदावर्त में रुग्ण को गौ का दुग्ध पिलाना चाहिए तथा शय कराना चाहिए। एवं उसके मन को अच्छी लगने वाली कथा सुनानी चाहिए ॥३५ ॥

- सर्वेष्वेतेषु भिए जा चोदावर्तेषु कृत्स्त्रशः । वायोः क्रिया विधातव्याः स्वमार्गप्रतिपतये ॥ “ (यो.र.चि. 1
- समस्त उदावर्त में सर्वप्रथम विगुणित वायु को प्रकृतिस्थ करने का प्रयास करना चाहिए

- सर्वेष्वेतेषु विधिवदुदावर्तेषु कृत्स्नशः । वायोः क्रिया विधातव्याः स्वमार्गप्रतिपत्तये । सामान्यतः पृथत्तवेन क्रियां भूयो निबोध मे ॥१ ९ ॥ (सु. उ ५५)
- सर्वोदावर्तेषु सामान्या वातहरी चिकित्सा – उक्त सर्वप्रकार के उदावर्तरोगों में वायु के प्रधान होने से उसे अपने मार्ग (स्वस्थान = पक्वाधानालयोऽपानः) में लाने के लिये यथाविधि वायु को जीतने की समस्त क्रियायें (स्नेहन , स्वेदन आदि) अथवा वातव्याधिरोग में कही हुई समस्त चिकित्सा सामान्य रूप से करनी चाहिए

चिकित्सा सूत्र

" तं तैलशीतज्वरनाशनाक्तं स्वैदैर्यथोक्तः प्रबिलीनदोषम् ।
उपाचरेद्वर्तिनिरुहवस्तिस्नेहविरकैरनुलोमनानैः ॥ "

(च.चिकित्सा. 26/11)

शीत ज्वर नाशक तैल का शरीर पर मालिश कर वात शामक स्वेदन का प्रयोग कराना चाहिए । तत्पश्चात् दोष द्रवित होने पर वर्ति , निरहवस्ति , नेह प्रयोग , विरेचन एवं वातानुलोमन चिकित्सा करनी चाहिए

चिकित्सा सूत्र

“ वातेऽधिकेऽम्लं लवणं सतैलं , क्षीरेण पिते तु कफे समूत्रम् । स मूत्रवर्णोऽनिलसंङ्गमाशु गुदं सिराश्च प्रगुणीकरोति ॥ “ (च.चि. 26/17)

उदावर्त में वायु की अधिकता हो तो अम्ल एवं लवण रस के साथ स्नेह वस्ति देनी चाहिए । पित्त की प्रधानता होने पर क्षीर वस्ति तथा कफ की प्रधानता होने पर गौमूत्र के साथ वस्ति देनी चाहिए ।

चूर्ण	वर्ति	क्वाथ	रस
१.श्यामादी प्रधमन चूर्ण(च.चि २६)	१.श्यामादी गुद वर्ति (च.चि.२६)	१. व्योष्यादी क्वाथ (भै.र.)	१. नाराच रस (भै.र.)
२. द्विरुत्तर हिन्वादी चूर्ण(च.चि २६)	२.पिण्याक वर्ति (च.चि.२६)	२. अग्नितुंडी वटी	२. कपर्द भस्म
३. हिंगुउग्रगंधादी चूर्ण (च.चि.२६)	३.क्रिमिघ्नादी वर्ति (च.चि.२६)	३. श्यामादी कषाय	३. शंख भस्म
४. वचादी चूर्ण (च.चि.२६)	४. पिप्पल्यादी वर्ति (च.चि.२६)		
५.नाराच चूर्ण (भै.र.)	५. हिन्वादी वर्ति (भै.र)		
५. हरिताक्यादी चूर्ण (चक्रदत)	६.फल वर्ति (भै.र.)		
६. हिन्वादी चूर्ण (चक्रद्त)	७. हिन्वादी फल वर्ति (भाव प्रकाश)		

७. उदावर्त हर चूर्ण	घृत	गुटिका	
८.अजमोदा अनारदाना चूर्ण	शुष्कमूलकादी घृत (भाव प्रकाश)	त्रिवृतादि गुटिका (चक्रदत्त)	
९. अविपत्तिकर चूर्ण	२. स्थिरादी घृत (च. चि)	२. अग्नितुण्डी वटी	
१०.चतुसम चूर्ण (अजमोदा, सैन्धव,हरीतकी, शुंठी)		३. लशुनादी वटी	
११.हिंग्वाष्टक चूर्ण		4. शंख वटी	
१२. शिवाक्षार पाचन चूर्ण			
१३. अजमोदादी चूर्ण			
१४. त्रिफला चूर्ण			

अन्य योग

- प्रात: काल लशुन का प्रयोग (चक्रदत)

२.निरुह बस्ति (च.चि.२६) – गोमूत्र, क्षार,अम्ल,तेल आदि वातनाशक द्रव्यों

वात दोष – अम्ल, लवण रस के साथ तेल की बस्ति

पित्त दोष- दूध की बस्ति

कफ दोष- गोमूत्र के साथ बस्ति

‘ निरुह बस्ति मूत्र , मल, वायुकी रूकावट को तथा गुदा और सिराओ को उत्तेजित करती है ।’

३. विरेचन (च.चि.२६) – यदि बस्ति के बाद भी उदावर्त बना रहे तो

गोमूत्र, प्रसन्ना, दही का पानी ,शुक्त इन द्रव्यों से विरेचन दे|

४. अनुवासन बस्ति (च.चि. २६)- विरेचन पश्चात् अनुवासन का विधान

बताया है|

Thank